International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-12-2025, Accepted: 13-01-2026, Published: 28-01-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 45-47

सबाल्टर्न के रूप में किसान : 'हिडिम्ब' उपन्यास के संदर्भ में

स्टेनी फ्रान्सिस
शोधार्थी, (महाराजास् कॉलेज, एरणाकुलम), महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम, केरल, भारत

सारांश
सबाल्टर्न साहित्य उन लोगों की आवाज़ है जो शक्तिहीन हैं, जिन्हें इतिहास द्वारा हाशिए पर डाल दिया गया है। 'हिडिम्ब' उपन्यास की माध्यम से एक दलित किसान के संघर्ष को दर्शाया गया है, जो अपनी ज़मीन–संपत्ति खो रहा है। यह कृति हिमाचली अंचल की पृष्ठभूमि के माध्यम से विकास के नाम पर विनाश, राजनेताओं द्वारा वन संपदा एवं आम जनता के शोषण को चित्रित करता है। यह उपन्यास सबाल्टर्न साहित्य का ज़बरदस्त उदाहरण है जो शोषितों के विद्रोह एवं प्रतिरोध को मुखरित करता है।

मूल शब्दः राजनेता, किसान प्रतिरोध, जाति समस्या, ज़मीन, पर्यावरण संकट, शोषण, ईश्वरीय विश्वास

साहित्य में अलग–अलग कालखण्डों पर विविध विमर्शों का उदय हुआ है। साहित्यकारों ने प्रत्येक समय के स्पंदन और माँग को पाठकों के सामने लाने का प्रयास किया है। साथ ही संवेदनशील एवं सहृदय साहित्यकारों की रचना में युगीन परिस्थितियों का अंकन होता है। साहित्य में मानवीय अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होती है। साहित्य एवं युगबोध अन्योनाश्रित हैं। सबाल्टर्न साहित्य द्वारा शोषित, दलित, स्त्री, आदिवासी एवं किसान को मुख्य धारा में लाने का कार्य किया गया। सबाल्टर्न शब्द का प्रथम प्रयोग इटली के मार्क्सवादी विचारक अंटोनियो ग्राम्शी ने अपनी रचना 'प्रिजन नोटबुक्स' में किया। उन्होंने सबाल्टर्न शब्द का प्रयोग समाज के दलित, वंचित, आश्रित, अधीनस्थ वर्ग के लोगों केलिए किया था। सबाल्टर्न शब्द का हिंदी में शाब्दिक अर्थ मातहत होता है। प्रभुत्व केवल आर्थिक दबाव के आधार पर नहीं होता। निम्नजन को उनकी गौणता का अहसास अलग–अलग प्रसंगों में प्रतिदिन कराया जाता रहा है। एक छोटे खेतीहर और भूस्वामी के मध्य केवल जमीन न होने ना होने का ही अन्तर नहीं होता, बल्कि वेशभूषा, बोलचाल, घर–द्वार, जात–पाँत, देवी–देवता सभी अभिजन वर्ग के ऊँचे होते हैं। अर्थात् जीवन के विविध पहलुओं पर ये भेदभाव दिखाई देता है।

किसान साहित्य में वेदना और विद्रोह की अभिव्यक्ति है। इस पूँजीवादी युग में किसानों का वजूद खतरे में पड़ गया है। किसान अपने श्रम के बल पर सदैव स्वावलंबी और आत्मनिर्भर रहा है। वह प्रकृति के साथ जुड़कर जीता है। भ्रष्ट राजनीति, भूमँडलीकरण और औद्योगीकरण ने किसानों को अपनी जड़ों से उखाड़ फेंका हैं। सत्ता द्वारा सदियों से किसानों की वाणी को दबाने की कोशिश करते आए हैं। एस आर हरनोट के उपन्यास 'हिडिम्ब' अपनी ज़मीन को बचाने केलिए आतुर एक किसान की अदम्य जिजीविषा को दर्शाता है। हिमाचल की पृष्ठभूमि पर आधारित इस उपन्यास में पर्वतीय अंचल के जनजीवन और लोक संस्कृति का चित्रण मिलता है। घाटी के लोगों की आराध्य देवी हिडिम्बा के नाम पर उपन्यास का शीर्षक रखा गया है। "ऐसी मान्यता रही है कि महाभारत युगीन समय में जब पांडवों को वनवास दिया गया था, उस वनवास का समय उन्होंने हिमाचल की पहाड़ियों में व्यतीत किया था। उसी श्रृंखला में एक स्थान पर रात्रि में विश्राम करते हुए जब भीम अपने निंद्रामग्न भाइयों की रखवाली कर रहा था। उस समय हिडिम्बा नामक राक्षसी उस पर मोहित हो गई। हिडिम्बा के भाई से हुए युद्ध में भीम ने उसे पराजित कर दिया और मृत्यु के घाट उतार दिया। यह मान्यता रही है कि हिडिम्बा द्वारा पांडवों की सहायता करने तथा उसके द्वारा भीम का पति रूप में वरण करने के कारण उसे अंचल में देवी की ख्याति प्राप्त हुई। आज भी हिडिम्बा को देवी के रूप में पूजा जाता है"1। उपन्यास में शावणु और उसके परिवार का जीवन हमेशा किसी न किसी खोफ से घिरा हुआ होता है। इस उपन्यास के पात्र निरंतर किसी न किसी समस्या से जूझते हुए हमारे सामने उपस्थित होते हैं। यह समस्या केवल उसकी नहीं है बल्कि उस समाज का है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है।

धार्मिक भावनाएँ, रीति–रिवाज़, अनुष्ठान आदि किसान एवं किसान जीवन को प्रभावित करते आ रहे हैं। धर्म के बल पर ही मनुष्य घोर आपदाओं और संकट के समय में धैर्य एवं बल प्राप्त करते हैं। किसान का ईश्वर पर अटूट विश्वास होता है, इसी विश्वास के कारण जीवन की अनिश्चितताएँ, यातनाएँ, उत्कण्ठाएँ, परेशानियाँ, बाधाएँ उन्हें परेशान नहीं करती। देवी हिडिम्बा के प्रति शावणू और उसके परिवारवालों की आस्था का पूरे उपन्यास में द्रष्टव्य है। हर मुसीबत के क्षण पर शावणु हिडिम्बा को याद करते हैं। मंत्री और उसके चम्चे द्वारा शावणु और उसके परिवार को तंग करने पर वह देवी से प्रार्थना करता है। चारों ओर हो रहे अत्याचार, अन्याय, गंदी राजनीति, पर्यावरण क्षरण से देवी हिडिम्बा नाराज़ है । वह लोगों से कहती है "पंचो सुणो सर्वनाश होगा.... कुछ नहीं रहेगा.....। मेरे देवता नाराज हैं... दुःखी हैं... मैं कहां जाऊ... क्या करूँ... कहाँ है मेरी जगह... मेरी ज़मीन... मेरे चरांद... मैं कहां अपणी गऊओं को चराऊ... कहां भेड़–बकरियों को ले जाऊ... वे भूखी मर रही हैं... प्यासी मर रही हैं...चिड़िया को बैठने तक के लिए पेड़ नहीं रखे...मसाफरों को छांव नी रही.. . पानी की बावड़ियां नहीं रहीं... खेतों में मक्की–गेहूँ नहीं रहे... क्यारों में धान नही रहे... चोरी से भांग बीजते हैं... अफीम बीजते हैं... बच्चों को खिलाते हैं... सबकुछ गन्दा कर दिया... नदी गंदी कर दी... वह रोती है... उसके बहने की जगह नहीं रही... पापी मन हो गए सभी के... सुणों पंचों...सुणों... मैं बड़ी दुखियारी हुं... मेरा दम घुटता है... तुम मेरे को बेचने पर तुले हो... चारों तरफ बेईमानी है... मैं अपणी जगह लूंगी....चरांद लूंगी..."2। उपन्यास में शवाणु और उसके परिवार एक साथ मिलकर दशहरा मनाने का लंबा विवरण मिलता है। सभी लोग मिलकर लोकगीत गाते हुए घर की लिपाई–पुताई करते हैं। मेले में भाग लेने केलिए शावणु और उसके परिवार वाले पैदल जाते हैं। रथ यात्रा में दो सौ से भी ज्यादा देवता आते थे। शावणु की पत्नी प्रत्येक देवता के नाम की मनौती माँगी थी। उन सबको वह पैसे चढ़ाती है। उसी तरह 'काहिका' का ज़िक्र भी उपन्यास में हुआ है, जो बारह साल में मनाया जाता है।

किसान केलिए उसकी ज़मीन ही सबकुछ है। उसका और परिवार की ज़िंदगी कृषि पर टिकी हुई है। किसान केलिए भूमि

उनकी माँ समान है, जिसकी पूजा वह निरंतर करता है। शवाणु जिस ज़मीन पर खेती कर रहा है, वह उसे कमटी ने दान में दिया था। काहिका में उसके पिता ने अपने प्राण की आहूति दिया था और उनके प्राण की कीमत के रूप में उन्हें ज़मीन दिया था। शावणु केलिए "ज़मीन ही उनकी रोजी–रोटी थी। खेती से ही घर के सारे खर्चे चलते थे"3। भ्रष्ट राजनेताओं और सरकारी अधिकारियाँ निजी लाभ केलिए अपनी विधायी शक्तियों का उपयोग करते हैं। चुनाव क्षेत्र के दौरे में मंत्री शावणु की भूमि को देखकर उससे मुग्ध होता है। "ज़मीन मन्त्री केलिए जिस्मानी हवस की तरह हो गई थी। वह जिस मकसद से दौर पर आया था उसे भूल गया। सामने थी तो बस वही ज़मीन"4। मंत्री जब शावणु को अपने पास बुलाकर उसे ज़मीन उन्हें बेचने को कहता है तो वह परेशान होता है। वह कहता है "माई बाप ! यह ज़मीन तो मेरे ज़मीन तो मेरे पुरखों की है। बाप दादा की है। उन्हें बी ये देओ किरपा से परापत हुई थी। आज हमारी दोथ–सांझ है। रोजी–रोटी है सरकार। मेरी माँ है। मैं अपणी माए को कैसे बेच सकता हूँ। मेरे को नी बेचणी है ज़मीन। नहीं बेचणी है"5। जब शावणु ज़मीन देने से मना करता है तो मंत्री उस ज़मीन को पाने केलिए कई हथकण्डे बनाते है। शावणु के बेटे को जान से मार देते है, जिसके कारण उसकी पत्नी नदी में कूदकर आत्महत्या करती है, काहिका का ढोंग रचकर शावणु को मारने की साजिश करता है। सारी तरकीबें असफल होने पर मंदिर की मूर्तियाँ चुराने की गलत इल्जाम लगाकर शावणु को जेल में कैद करने का षड्यंत्र रचनेवाला मंत्री उसका जिंदगी ही हराम कर देता है। इसी मंत्री की वज़ह से शावणु की बेटी सूमा को एरी नामक एक विदेशी लड़के से कन्ट्रैक्चूअल मैरिज करनी पड़ती है। लेकिन शावणु हारने केलिए तैयार नहीं होता। वह लड़ता है, संघर्ष करता और अंत में विजयी होता है। शावणु अपनी ज़मीन को घाटी में निर्मित होनेवाले अस्तपाल केलिए दान कर देता है। उपन्यास के अंत में छाते के बिना बारिश में खड़ा होकर शावणु का भीगना, उसके अदम्य संतोष का प्रकटीकरण है। भ्रष्ट राजनेताओं के हाथ से अपने ज़मीन को बचानेवाले एक किसान के साहस को दर्शाता है। "शावणु एक घड़ी केलिए भूल गया था कि उसने इतना लम्बा सफर आग पर चलते–चलते गुजारा था। उसने जो कुछ आज पाया था वह किसी विजय से कम न था। अविस्मरणीय और अद्‌भुत था जिसकी किसी ने कल्पना तक न की थी। उसके मन में प्रसन्नता के तूफान उठ रहे थे। पर उसे समझ नहीं आ रहा था कि इस खुशी को व्यक्त कैसे करे। उसने छाता शोभा को पकड़ दिया और खुद बारिश में खड़ा हो गया। भीगता रहा ..... काफी देर। फिर बाहें कुछ इस तरह फैलाई मानों आसमान को उन पर उठाना चाहता हो"6। दशहरे के समय शावणु की पत्नी ने एक बड़ी मनौती ज़मीन को लेकर की थी। देवी हिडिम्बा से उसने अपनी भूमि केलिए प्रार्थना की थी। पहले भी मंत्री ने अवैध रूप से एक गरीब किसान की भूमि हथिया लिया था। हरिजन ने मंत्री के खिलाफ़ मुकदमा दर्ज करा दिया तो उनके आदमीयों ने उसके चेहरे पर तेज़ाब फेंका। बाद में पटवारी और अधिकारियों ने ज़मीन के झूठे कागजात बनाए कि हरिजन ने उस ज़मीन मंत्री को बेच दी थी। घाटी लोगों द्वारा अपनी ज़मीन को व्यापारियों को बेच देने से चिंतित शवाणु का चित्र उपन्यासकार खींचते है। "शावणु देख कर हैरान–परेशान था कि कई ग्रामीणों ने सड़क के साथ लगी अपनी बहुत सारी ज़मीन कौड़ियों के भाव बेच दी थीं। लोगों के पास ज़मीनें भी बहुत थीं। भरे–पूरे बागीचे थे। खेत और धान के क्यार थे। उनके पास पैसा ज्यादा नहीं होता था, लेकिन ज़मीन–जायदाद की तरफ से वे राजा थे। पर उन्हें इस सोने की कतई कद्र नहीं थी"7। भूमि की कद्र न करनेवाले लोगों के मनोभाव से हैरान शावणु का चित्र हमें यहाँ देखने को मिलता है। भारत में चिरकाल से जातिगत समस्या एक विकराल रूढ़ि के रूप में विध्यमान रही है। जाति के कारण निम्न समाज को उत्पीड़न, शोषण, जातीय भेदभाव से गुज़रना पड़ता है। अस्पृश्यता की समस्या के कारण निम्न जातियों को बहुत कुछ सहना पड़ता है। निम्न जाति के होने के कारण शावणु और उसके परिवार को ऊँचे जाति के लोग अवज्ञा भरी दृष्टि से देखते थे। मुख नड़ और नड़न होने के नाते काहिका के समय में उन्हें कुछ इज्जत दी जाती थी। "लेकिन जब उसकी ज़रूरत न होती, तो वह अछूत, चंडाल बन जाता। गांव–बेड़ के पिछवाड़े का एक आवारा कुत्ता। पूजा–पाठ करते हुए ब्राह्मण देख लें तो हजारों मन गालियां देने लगें। पानी छू ले तो अपवित्र हो जाए। देवता को स्पर्श कर ले तो गुनहगार, अपराधी और कड़े दंड का भागीदार"8। अपने मित्र शोभा को खाँसी आने पर पानी पिलाने को भी शावणु कतराता है। उपन्यासकार लिखते है कि शावणु का मन किया कि उठकर पानी की घूंट पिला दे, पर जाति के फासले आड़े आते रहे। निम्न जाति के लागों के मन में हीनता का भाव दबा रहता है। चाहे दूसरा आदमी कितना ही सखा क्यों न हो, उसे छूने में शवाणु जैसे लोग डरते है। शोभा के इशारे करने के बाद गिलास में पानी भरने वाला शावणु का चित्रण उपन्यासकार करता है। बचपन से ही बच्चों के मन में जाति संबंधी गलत धारणाएँ धोपी जाती है। बचपन में शावणु को मंदिर में प्रवेश करने का बड़ा आग्रह था। उसके नन्हे मन की विचारों को उपन्यासकार ने यों इस तरह प्रस्तुत किया है। "मन कर रहा था कि सीढ़ियों से भागता हुआ ऊपर चढ़ जाए और जी भर कर देवता को देख ले। उसे मथा टेक दे। लेकिन यह तो मात्र उसकी सोच थी। वह तो मन्दिर की चौखट तक को भी नहीं छू सकता था। ऊपर जाने का तो बात दूर। उसके पिता ने बताया था कि उनकी जाति के लोग मन्दिर को नहीं छूते। ऐसा करने से देवता नाराज हो जाते हैं। फिर वह देवता को कैसे नाराज कर सकता था ?"9। छोटे शावणु चाहकर भी मंदिर में प्रवेश नहीं कर पाया, क्योंकि वह निम्न जाति का था। उसी तरह कांसी के स्कूल में सक्रान्त के दिन देवी को प्रसाद चढ़ाया जाता था। उसके साथियों को मास्टर ने कई काम सौंपे थे जैसे जंगल से लकड़ियाँ लाना, बर्तन धोना, पानी भरना आदि। निम्न जाति के होने की वज़ह से काँसी को कोई काम नहीं दिया था। "वह जानता था कि उसके हाथ की तो लकड़ियां भी मास्टर नहीं लेंगे। उनमें भी उनकी जाति की बू आती है।.... हृदय में आज पहली बार ईर्ष्या जागती प्रतीत हुई थी"10। दशहरे के समय में शावणु और परिवार कुलदेवी को रुपए चढ़ाने को जाते हैं, लेकिन उन्हें बाहर खड़ा होना पड़ते है और देवी के चावल शावणु की घरवाली के पल्लू पर फेंक देते हैं। "शावणु सोच रहा था यदि कोई बड़ी जाति का होता तो पुजारी उसे भीतर ले जाकर पूजा–दर्शन करवाता। पर उनके भाग में ऐसा कहां था....?"11। जीवन के हर पड़ाव पर शावणु और उसके परिवार को ऐसी हीनता भाव महसूस होता था।

पर्यावरण को नुकसान पहूँचाकर मिलनेवाला लाभ टिकाऊ नहीं है। प्रकृति को नुकसान पहूँचाकर लाभ लेना भारतीय संस्कृति नहीं है। उपन्यास में सड़क का निर्माण और बिजली पैदा करने केलिए पर्यावरण पर होनेवाले विनाश का चित्रण मिलता है। सुरंग का निर्माण के लिए पहाड़ी की एक हिस्से को पूरी तरह तोड़ दिया गया था। शवाणु केलिए यह दृश्य असहनीय था। देवदेरों का घना जंगल और नदी शावणु केलिए अत्यंत प्रिय था। डायनामाईट के भीषण विस्फोटों से उड़ते धुँआ में उसे आसपास की पहाड़ियाँ और देवदारू झुलसते नज़र आते थे। पहाड़ियाँ और देवदारूओं के नष्ट होने का दुःख उसे कितना है इसका अंदाजा पाठक लगा सकते है जब शवाणु अपनी बेटी सूमा से यह पता लगाने को कहता है कि "जब यहां आएगा.... तो तू पूछिओ उसको कि सामणे के सारे पहाड़ खत्म हो जाएंगे.... पेड़ भी नी रहेंगे.....?"12। किसान प्रकृति प्रेमी होता है। उनकेलिए धरती माँ ही है। प्रकृति के साथ हो रहे खिलवाड़ को वह सहन नहीं कर

सकता। वह प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर जीना चाहता है। वह जानता है कि प्रकृति और पर्यावरण से छेड़छाड़ करने का नतीजा मानव को ही भोगना पड़ेगा। प्रकृति अपने साथ होनेवाले छेड़छाड़ का उत्तर प्राकृतिक आपदाओं को रूप में देती है। उपन्यास के अंत में इसका चित्रण मिलता है, "घाटी के लोगों के लिए वह रात कयामत लेकर आई थी। नदी में बाढ़ आ गई थी। कई जगह बादल फट गए थे। नदी के छोर पर बसे गांव,बड़े–बड़े अफसरों, उद्योगपतियों और राजनेताओं के आलिशान बंगले और होटल नदी में बह गए थे"13।

धर्म की आड़ में अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को पूरा करनेवाले राजनेताएँ प्रत्येक देश केलिए आभिशाप है। 'हिडिम्ब' उपन्यास के मंत्री घाटी में चरस और अफीम उगाकर पैसा कमाने की लालच में हैं तथा उस प्रदेश के प्राचीन मंदिरों की विलक्षण मूर्तियों पर भी उसका नज़र है, जिसे वह विदेशी बाजारों में करोड़ों रुपए पर बेचना चाहता है। "वह कुछ ऐसा विलक्षण और अनूठा कार्य करना चाहता था जिससे करोड़ों कमाए और अपनी छवि भी बिलकुल साफ रहे... और इसके लिए गायें पालने का कार्य तो किसी महा धार्मिक अनुष्ठान के बराबर होगा... उसकी आड़ में जो भी करेगा उसी तरह पवित्र रहेगा जैसे किसी गन्दे पानी के कुंए में एक बूंद गंगाजल मिलाने मिलाने से उसका सारा पानी पवित्र बन जाता है"14। शावणु इन नेताओं की असलियत जानते हैं। उपन्यासकार शावणु के मन के विचारों को यों प्रस्तुत किया है, "वह सोचने लगा कि इन पहाड़ों की स्थिति भी उस जैसी ही हो गई है... अपने स्वार्थ के लिए ये नेता लोग कुछ भी नहीं देखते, चाहे वह कोई गरीब हो या फिर हरे–भरे जंगल या पहाड़। हालांकि ये सारे काम विदेशी कम्पनियों के हाथों हो रहे थे जिसमें एरी भी था लेकिन वह दोष वहां की सरकार और स्वार्थी नेताओं को ही देता था जो दिन रात इन पहाड़ों और नदियों का सौदा कर रहे थे"15। शोषित वर्ग अनादिकाल से अत्याचार, दमन का शिकार बन रहे हैं। ये हिडिम्ब (राक्षस) रूपी राजनेताएँ अपनी स्वार्थता केलिए दूसरों के जान तक दाँव पर लगा देते हैं। अपने मकसद पर पहूँचने केलिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। मूर्ति चुराने की इल्जाम में जब शावणु को हवालात में डालते हैं तो रात में मशाल की रोशनी में उसे कई आकृतियाँ दिखती है, उन्में एक आकृति शावणु से कहता है "देख...शावणु... देख...ये देख मेरा असली रूप... जिस रूप में मैं नेता के वेश में जनसेवा कर रहा हूं....। मुझे आज न किसी तपस्या की जरूरत है और न किसी ईश्वर या देवता के वरदान की। मेरी शक्ति तो तुम जैसे अभागे और लाचार गरीब लोग हो। मेरा वरदान तुम ही हो। मेरो सर्वस्व तुम ही हो। तुम जैसों की पीठ पर चढ़ कर ही मैं पृथ्वी का राजा बना हूँ। कोई असुर या राक्षस नहीं हूं मैं। मेरे कोई डरावने या भयंकर रूप भी नहीं हैं। मैं तो एक आम और साधारण–सा व्यक्ति हूं। धोती–कुरते में रहता हूं। नेता कहते हैं मुझे लोग। राक्षसों से भी कहीं खतरनाक..."16।

घाटी में हो रहे बदलावों की ओर भी उपन्यासकार इशारा करते हैं। जैसे चरस–भांग, विदेशी नशा बेचकर और देवदार जैसी बेशकीमती लकड़ियों का तस्करी करके पैसा कमानेवाले लोगों का चित्रण भी उपन्यास में मिलता है। ठेकेदार नशे की बिक्री केलिए दलित परिवार के बच्चों का इस्तेमाल करते हैं। वे माल को जगह–जगह पहूँचते हैं और खुद भी नशे के शिकार होते हैं। स्कूल में मास्टर बच्चों को छुट्टी देते थे और उनसे भांग मलने का धंधा करवाते थे। शोभा का छोटा बेटा विदेशी नशा का शिकार हो गया और बड़े बेटा दारू–भांग पीकर धुध रहता है। घाटी के लोग किस तरह शोषण का शिकार हो रहे हैं इसका तस्वीर उपन्यासकार देता है।

किसान साहित्य के मूल में निषेध, नकार और विद्रोह की भावना है। किसान विमर्श के केंद्र में दुःख, दर्द, शोषण, संघर्ष, जिजीविषा तथा मुक्ति की कामना है। 'हिडिम्ब' उपन्यास में एस. आर हरनोट ने शोषित समाज की यातनाओं को लिपिबद्ध करने की कोशिश किया है। शावणु का संघर्ष सत्ता से है, भ्रष्टाचारी नेताओं से है, प्रकृति के साथ खिलवाड़ करनेवाले स्वार्थी एवं लालची लोगों से है। यह संघर्ष केवल शावणु का नहीं है बल्कि उन असंख्य शोषित, दमित, हाशिएकृत किसानों की है जिन्हें आवाज़ उठाने के अधिकारों से वंचित रखा गया है, चुप कराया गया है। "कहना न होगा कि सबाल्टर्न अध्ययनों में जिस राष्ट्र को एक खलनायक के रूप में दिखाया जा रहा था, वस्तुतः एक सच्चे नायक और हमसफर के रूप में उसकी जरूरत है। विडंबना यह है कि जिस दौर में राष्ट्रवाद का भारी शोर है, उसी दौर में राष्ट्र कमजोर और धीरे–धीरे गायब हो रहा है। वह कारपोरेट–बंदी है"17। सरकार विदेशी कंपनियों और भ्रष्टाचारी नेताओं के हाथ के कठपुतली बनकर रह गए है। किसान अपने हक की लड़ाई लड़ रहे हैं। "भारत में कृषकों की सर्वभारतीय आवाज कभी नहीं रही है, क्योंकि देश किसी भी राजनीति के वे मुख्य मुद्दा नहीं रहे हैं। ..... बाजार, राजनीति, मीडिया और कला–संस्कृति के प्रवाह का एकतरफा रुख महानगर से गांव–कस्बे की ओर है। गांव घिरे हुए हैं। गांव विच्छिन्न हैं। उनसे अन्न के अलावा कुछ और लेने में किसी को दिलचस्पी नहीं है"18।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में किसान अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गए हैं। वे अपनी लड़ाई खुद लड़ते हैं, हिडिम्ब की शावणु की तरह। वे सत्ता और शोषकों से डरते नहीं हैं, अपने अस्तित्व को बरकरार रखने केलिए जान गँवाने तक को भी तैयार हैं। "भारत के किसान सम्मानपूर्वक जीना चाहते हैं। इस सम्मानपूर्वक जीने में खेतों में स्वतंत्रतापूर्ण ढंग से अन्न पैदा करने के अलावा, शुद्ध खाना–पीना, पढ़ना–लिखना, पहनना–ओढ़ना, अपनी कोमल भावनाओं के साथ मजबूत घर में रहना और सही सूचनाएँ पाना शामिल है"19। सत्ता और समाज को कृषकों की तकलीफ़ों और आक्रोश को समझने की सख्त ज़रूरत है। उनके सपनों को साकार करने में मद्द करनी चाहिए। लहलहाती खेती और आत्मनिर्भर किसान समय की माँग ही है।

संदर्भ

1. हिंदी के प्रमुख आंचलिक उपन्यासरू सांस्कृतिक पिछड़ापन और जागृति, डॉ. राजेन्द्र कुमार सेन, कल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृ.69
2. हिडिम्ब, एस.आर. हरनोट, आधार प्रकाशन, हरियाणा, 011, पृ.91–92
3. वही,पृ.10
4. वही,पृ.12
5. वही,पृ.22
6. वही,पृ.262
7. वही,पृ.62
8. वहीं,पृ.38
9. वहीं,पृ.41
10. वहीं,पृ.111
11. वहीं,पृ.96
12. वहीं,पृ.163
13. वहीं,पृ.263
14. वहीं,पृ.14
15. वहीं,पृ.256
16. वहीं,पृ.235
17. इतिहास में अफवाहः उत्तर–आधुनिक संकट से गुजरते हुए, शंभुनाथ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2024, पृ.95
18. वहीं,पृ.95
19. वहीं,पृ.94